M.A. Semester - IV

Philosophy DSE- 1.

Unit- I

Prof. Ragini Kumari
Prof & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

Hindu View and Buddhistic View of Soul

(Part - II)

बौद्ध धर्म का आत्म विचार

बौद्ध धर्म की आत्मा सम्बन्धी अवधारणा के सम्बन्ध में एक निषेधात्मक विचार है। वस्तुतः बौद्ध धर्म का उद्भव और विकास भगवान बुद्ध के धर्म उपदेशों के आधार पर हुआ है। अतः 'आत्मा' के प्रश्न पर उनकी चुप्पी एवं इनके 'अनित्यवाद' प्रभृति सिद्धान्तों के बल पर बौद्ध धर्म के अनुयायियों ने 'अनात्मवाद' के रूप में आत्मा सम्बन्धी सर्वथा खण्डनात्मक विचार का प्रवर्तन किया है।

बौद्ध धर्म की यह मौलिक विशेषता है कि प्रतीत्यसमुत्पादवाद तथा इससे प्रतिफलित अनित्यवाद के आधार पर यह धर्म सभी तत्वों अथवा वस्तुओं की नित्यता तथा शाश्वतता का निषेध करता है। इन्हीं विचारों के पोषण में धम्मपद स्पष्टतः उद्घोषित करता है कि —

"जो नित्य तथा स्थायी मालूम पड़ता है, वह भी नाशवान है, जो महान मालूम पड़ता है, उसका भी पतन है।"

स्पष्ट है बौद्ध धर्म का यह अनित्यवाद जिसका उत्तरोत्तर विकास 'क्षणिकवाद'

में हुआ है, हिन्दू धर्म की इस आत्मा रूप सत्ता का निषेध करता है जिससे नित्यता, शाश्वतता तथा अमरता का बोध होता है। वस्तुतः बौद्ध धर्म का यह क्षणिकवाद सभी सत्ताओं को न केवल अनित्य वरन् क्षणभंगुर कहता है। अतः ऐसी स्थिति में यहाँ आत्मा रूप अमर तथा नित्य शाश्वत सत्ता के लिए कोई स्थान ही नहीं बन पाता है और इसी का प्रतिफल है कि आत्मा के सन्दर्भ में बौद्ध धर्म अनात्मवाद का पोषण करता दृष्टिगत होता है।

बौद्ध धर्म के तत्व सिद्धान्त के अन्तर्गत इस सत्य पर बल दिया गया है कि सब कुछ अनित्य, गतिशील, क्षणिक एवं परिवर्तनशील है। कहीं भी स्थायित्व अथवा नित्यता नहीं है। इसलिए आत्मा नाम की कोई नित्य वस्तु नहीं है। साधारणतः इस प्रश्न की मान्यता प्रस्तुत की जाती है कि कल्पना इच्छाएँ, भावनाएँ, चेतना तथा विचार क्रिया इत्यादि किसी नित्य तत्व के गुण हैं, जिन्हें आत्मा की संज्ञा दी जाती है, लेकिन यहाँ इससे भिन्न बौद्ध धर्म की मान्यता है कि प्रत्यक्ष विचार आकारें इत्यादि रूप स्थित है इनका कोई स्थायी आधार नहीं है। ये क्रियाएँ ही आत्मा कही जाती है। अतः आत्मा की कोई सत्ता नहीं है।

वस्तुतः अपनी आत्मा सम्बन्धी अवधारणा को प्रस्तुत करने के क्रम में बौद्ध धर्म इसे विज्ञान सोपान अर्थात् चेतना का प्रवाह (A stream of consciousness of a series of mental process or ideas) कहा गया है। इनके अनुसार, आत्मा में एकता समझना वस्तुतः भ्रम है क्योंकि वह यथार्थ में सतत प्रवाह, परिवर्तनशील तथा अनवरत गतिशीलता है। उपमामूलक व्याख्या के आधार पर इसे स्पष्ट करते हुए यहाँ कहा गया है कि जैसे नदी में जल के कण भिन्न-भिन्न हैं,

लेकिन उनकी तीव्रता निरन्तरता एवं सह-अस्तित्व के कारण हम उन्हें अज्ञानवश एक नदी के रूप में समझ बैठते हैं, अथवा जैसे ज्वाला में अग्नि के भिन्न कण ज्योति के प्रवाह के रूप में दिखाई पड़ते हैं उसी तरह अनित्य विचारों के समूह को हम भ्रम और अज्ञानता के कारण नित्य आत्मा समझ लेते है। यथार्थ में आत्मा इस क्षणिक विचारों, भावनाओं तथा प्रत्यक्षों का समूह रूप है। इनकी परिवर्तनशीलता में हमें भ्रमवश एक निरन्तरता दिखायी पड़ती है

इस प्रकार अपने अनात्मवाद के पोषण में बौद्ध धर्म आत्म सम्बन्धी एक विशिष्ट विचार का पोषण करता है। इसके अनुसार जिसे 'आत्मा' कहा जाता है वह यथार्थ में केवल भौतिक तथा मानसिक क्रियाओं का संघात (psycho-somatic complex) है। बौद्ध धर्म उपदेशक नागसेन ने आत्मा के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहा है कि जिस प्रकार धुरी, पहिए, रस्सी इत्यादि के संघात विशेष का दूसरा नाम 'रथ' है इसी प्रकार पाँच स्कन्धों, रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञान के परस्पर संघात का नाम आत्मा है। चूंकि ये स्कन्ध परिवर्तनशील स्वरूप के हैं, इसलिए आत्मा भी परिवर्तनशील होती है।

एक बात महत्वपूर्ण रूप से उल्लेखनीय है। बौद्ध धर्म आत्मा की अनित्यता परिवर्तनशीलता पर बल देता है, लेकिन इसके साथ ही यह पुनर्जन्म की अवधारणा को भी अपनी मान्यताओं के अन्तर्गत स्थान प्रदान करता है। वस्तुतः अपनी पुनर्जन्म की विशिष्ट अवधारणा के अन्तर्गत बौद्ध धर्म इसका अर्थ एक आत्मा का एक शरीर छोड़ दूसरे शरीर में प्रवेश स्वीकार नहीं करता बल्कि इसके विपरीत यहाँ पुनर्जन्म का अर्थ विज्ञान प्रवाह की अविच्छिन्नता है। जब एक विज्ञान प्रवाह का अंतिम विज्ञान समाप्त हो जाता है, तब अंतिम

विज्ञान की मृत्यु हो जाती है और एक नये शरीर में एक नये विज्ञान का प्रादुर्भाव होता है। इसी को बुद्ध ने पुनर्जन्म की संज्ञा प्रदान की है। स्पष्ट है कि बिना किसी नित्य आत्मा को स्वीकार किए ही बौद्ध धर्म पुनर्जन्म की अवधारणा को अपनी मान्यता में प्रश्रय प्रदान किया है। ~~स्पष्ट है कि बिना किसी नित्य आत्मा को स्वीकार किए ही बौद्ध की अवधारणा को अपनी मान्यता~~

हिन्दू तथा बौद्ध मत का तुलनात्मक अध्ययन

तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन की दिशा में प्रवृत्त होने पर हिन्दू तथा बौद्ध आत्मा अवधारणा में परस्पर प्रतिकूलता स्पष्ट होती है, जिसे निम्नतः स्पष्ट किया जा सकता है-

(1) हिन्दू धर्म में आत्मवाद को प्रश्रय प्राप्त हुआ है, जबकि बौद्ध धर्म की आत्म दर्शन अनात्मवाद है।

(2) हिन्दू धर्म आत्मा को नित्य, एकरस, शाश्वत सत्ता का बोध कराता है जबकि इसके विपरीत बौद्ध धर्म आत्मा की अनित्यता तथा परिवर्तनशीलता को स्थापित करता है। हिन्दू जहाँ आत्मा की शाश्वतता की स्थापना में तर्क प्रस्तुत करते हैं, वहीं बुद्ध आत्मा को नित्य समझने से हानि का उपदेश देते हैं। इनके अनुसार आत्मा को नित्य समझ लेने से उसमें आसक्ति बढ़ती है और हम उसे सुखी बनाने के चक्कर में दुःख उठाते रहते हैं।

बुद्ध के अनुसार अदृश्य और अप्रमाणिक आत्मा से प्रेम रखना वैसा ही हास्यास्पद है, जैसा कि अदृष्ट अश्रुत अथवा कल्पित सुन्दरी से प्रेम रखना। पोट्ठपाद सूत्र में कहा गया है कि आत्मा के प्रति अनुराग रखना एक ऐसे प्रासाद पर चढ़ने के लिए सीढ़ी तैयार करना है, जिसे किसी ने कभी देखा न हो।

(3) यहाँ दोनों के मतों में जो तीसरी भिन्नता स्पष्ट होती है, वह यह है कि बौद्ध धर्म में द्रव्यजीव की सत्यता स्वीकार की गयी है, जबकि इससे भिन्न हिन्दू धर्म द्रव्य हीन आत्मा की सत्यता को स्वीकार करता है।

X———X